13-02-22 प्रात:मुरली ओम् शान्ति ''अव्यक्त-बापदादा'' रिवाइज 10-01-90 मधुबन

होलीहँस की विशेषतायें

आज सर्व बच्चों को विशेष आत्मा बनाने वाले बापदादा हर एक होलीहँस की विशेषता देख रहे हैं। जैसे हंस की निर्णय-शक्ति और परखने की शक्ति विशेष होती है इसलिए ग्रहण करने की शक्ति भी विशेष है जो मोती और कंकड़ दोनों को परखता है और फिर निर्णय करता है, उसके बाद मोती ग्रहण करता है, कंकड़-पत्थर छोड़ देता है। तो परखना, निर्णय करना और ग्रहण करना अर्थात् धारण करना – तीनों शक्तियों की विशेषता के कारण संगमयुगी सरस्वती माँ की सवारी हंस दिखाया है। तो एक सरस्वती माँ का यादगार नहीं लेकिन माँ समान बनने वाली ज्ञान-वीणा वादिनी आप सभी हो। इस ज्ञान को धारण करने के लिए भी यह तीनों विशेषतायें अति आवश्यक हैं। आप सभी ने ब्राह्मण-जीवन धारण करते ही ज्ञान द्वारा विवेक द्वारा पहले परखने की शक्ति के आधार को पहचाना, अपने-आपको पहचाना, समय को पहचाना। अपने ब्राह्मण परिवार को पहचाना, अपने श्रेष्ठ कर्तव्य को पहचाना, इसके बाद निर्णय किया तब ही ब्राह्मण-जीवन धारण की। यह वही कल्प पहले वाला बेहद का बाप है, परम आत्मा है, मैं भी वही कल्प पहले वाली श्रेष्ठ आत्मा हूँ, अधिकारी आत्मा हूँ – इस परखने के बाद निर्णय किया। बिना बाप को परखने के निर्णय नहीं कर सकते। कई आत्मायें अभी तक भी सम्बन्ध-सम्पर्क में हैं, बहुत अच्छा, बहुत अच्छा कहती रहती हैं लेकिन परमात्म-पहचान वा परखने की शक्ति न होने कारण निर्णय नहीं कर सकते कि क्या बनना है वा क्या करना है, इसलिए ब्राह्मण-जीवन धारण नहीं कर सकते। सहयोगी बनते हैं लेकिन सहज योगी जीवन नहीं बना सकते क्योंकि दोनों शक्तियाँ नहीं हैं, इसलिए होलीहंस नहीं बन सकते। पवित्रता रूपी मोती और अपवित्रता रूपी कंकड़ – दोनों को अलग नहीं समझते तो पवित्रता को ग्रहण करने की शक्ति नहीं आ सकती। तो होलीहंस की विशेषता है पहले शक्ति ''परखना'' अर्थात् पहचानना। आप होलीहँसों में यह दोनों शक्तियाँ हैं ना? क्योंकि बाप को पहचाना, अपने-आपको भी पहचाना, निर्णय भी ठीक किया तब तो ब्राह्मण बने और चले रहे हो। इस बात में तो सब पक्के पास हो। लेकिन जो सेवा करते हो और कर्म में आते हो, सारे दिन की दिनचर्या में जो कर्म करते हो, सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो, उसमें सफलतापूर्वक हर कर्म रहे वा हर सम्पर्क वाली आत्मा के सम्बन्ध में आने में सदा सफलता रहे। हर प्रकार की सेवा मन्सा-वाचा-कर्मणा – तीनों में सदा सफलता अनुभव हो, उसका भी आधार परखने की शक्ति और निर्णय करने की शक्ति है। इसमें फुल पास हो?

सेवा की सफलता वा सम्पर्क में सफलता सदा न होने का कारण चेक करो – तो कार्य को, व्यक्ति को, आत्मा को परखने की शक्ति में अन्तर पड़ जाता है। जिस आत्मा को जिस समय जिस विधिपूर्वक सहयोग चाहिए वा शिक्षा चाहिए, स्नेह चाहिए, उस समय अगर परखने की शक्ति तीव्र है तो अवश्य सम्बन्ध में सफलता प्राप्त होगी। लेकिन होता क्या है? जिस आत्मा को जो सहयोग वा विधि उस समय चाहिए वो न देकर वा न परखने कारण अपने ढंग से उसको सहयोग देते हो वा विधि अपनाते हो, इसलिए सन्तुष्टता की सफलता नहीं होती। जैसे शारीरिक बीमारी को परखने की डॉक्टर को विधि न आये तो क्या होता है? ठीक होने के बजाए एक से अनेक रोग और पैदा हो जाते हैं। पेशेन्ट को सन्तुष्टता की सफलता नहीं मिलती। जिसको साधारण शब्दों में बापदादा कहते हैं कि हर एक की नब्ज को पहचानो। चलना और चलाना भी जरूरी है। तो क्या करना पड़ेगा? पहचानने अर्थात् परखने की शक्ति को तीव्र करना पड़े। इसमें अन्तर पड़ जाता है, जिसको आप साधारण भाषा में कहते हो हैंडलिंग का फ़र्क। कहते हो ना – इनकी हैंडलिंग पुरानी है, इनकी नई है..। यह अन्तर क्यों पड़ा? क्योंकि हर समय हर आत्मा और हर कार्य को परखने की शक्ति चाहिए। टोटल परखने की शक्ति आ गई है लेकिन विस्तार से और बेहद के परखने की शक्ति की आवश्यकता है – उस समय आत्मा की ग्रहण शक्ति कितनी है, वायुमण्डल क्या है और उस आत्मा की सुनने वा शिक्षा लेने की मूड कैसी है..। जैसे कोई कमजोर शरीर वाला हो और उसको ज्यादा-से-ज्यादा ताकत का इन्जेक्शन दे देवें तो क्या हालत होगी? वह तो हार्टफेल हो जायेगा, शान्ति में चला जायेगा। ऐसे अगर सम्बन्ध में आने वाली आत्मा कमजोर है, आत्मा में हिम्मत नहीं है लेकिन आप उसको शिक्षा का डोज़ देते जाओ, उसका मूड, समय वायुमण्डल परख न सके तो रिजल्ट क्या होगी? एक तो दिलशिकस्त हो जायेगा और शक्ति न होने कारण ग्रहण नहीं कर सकेगा, और ही जिद्द और सिद्ध करने में उछलेगा। आपने तो अच्छी भावना से किया लेकिन सफलता न मिलने का कारण परखने और निर्णय करने की शक्ति कम है, इसलिए सफलतामूर्त बनने में परसेन्टेज हो जाती। तो सारे दिन के कर्म और सम्बन्ध में परखने के शक्ति की आवश्यकता

हुई ना इसलिए शिक्षा भल दो लेकिन सब बातों को परखकर फिर कदम उठाओ। ऐसे ही सेवा के क्षेत्र में भी अगर आत्माओं की आवश्यकता और इच्छा परखने के बिना कितना भी अच्छा ज्ञान दे दो, कितनी भी मेहनत कर लो लेकिन सफलता नहीं होगी। ''अच्छा-अच्छा'' कहना तो एक रीति-रसम हो गई है क्योंकि आप कोई बुरी बात तो कहते भी नहीं हो। लेकिन जो सफलता का लक्ष्य रखते हो, उसमें समीप अनुभव करो उसके लिए परखने की शक्ति अति आवश्यक है। जैसे कोई मुक्ति का इच्छुक है और उसको आप जीवन मुक्ति और मुक्ति – दोनों भी दे दो लेकिन वह रुचि नहीं रखेगा। पानी के प्यासे को 36 प्रकार का भोजन दे दो लेकिन वह सन्तुष्ट पानी की बूँद से ही होगा, न कि भोजन से। तो मुक्ति के इच्छुक को परखकर अगर उसको मुक्ति के बारे में स्पष्टीकरण देंगे तो उसकी इच्छा भी बढ़ेगी और जीवनमुक्ति में परिवर्तन भी हो जायेंगे। किसको धारणा की बातें सुनना अच्छा लगता है, उसको आप कल्प 5000 वर्ष का वा गीता का भगवान कौन – यह बताना शुरू कर दो तो और ही इन्ट्रेस्ट खत्म हो जायेगा इसलिए सेवा में भी आत्मा की स्थिति वा उसकी आस्था क्या है – उसको परखना आवश्यक है। तो सेवा में सफलता का आधार किस शक्ति पर हुआ? परखने की शक्ति चाहिए। चाहे अज्ञानी आत्माओं की सेवा, चाहे सेवा-साथियों की सेवा – दोनों में सफलता का आधार एक ही है। तो होलीहँस की विशेषता – सबसे पहले परखने की शक्ति को बढ़ाओ। परखने की शक्ति यथार्थ है, श्रेष्ठ है तो निर्णय भी यथार्थ होगा और आप जिसको जो देना चाहते हैं वह उसमें ग्रहण करने की शक्ति स्वत: ही होगी। और क्या बन जायेंगे? नम्बरवन सफलतामूर्त। तो चाहे सेवा में, चाहे सम्बन्ध में लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए इस लक्षण को धारण करो।

तो सारे दिन में यह चेक करो – सारे दिन की दिनचर्या में परखने की शक्ति कहाँ तक यथार्थ हुई और कहाँ करेक्शन-एडीशन करने की आवश्यकता रही? करने के बाद करेक्शन अपने-आप होती जरूर है क्योंकि दिव्य बुद्धि का वरदान सबको मिला हुआ है। चाहे समस्या के वश, समय वा परिस्थिति के वश वा कोई आत्माओं के संग के वश वा माया द्वारा मनमत के वश, उस समय परवश हो जाते हैं लेकिन समय, परिस्थिति, संग का प्रभाव, मनमत का प्रभाव जब हल्का हो जाता है फिर दिव्य बुद्धि अपना काम करती है, जिसको आप लोग कहते हो जोश से होश में आ गये। फिर महसूस होता है कि यह करेक्शन वा एडीशन होनी चाहिए थी वा करनी है। लेकिन रजिस्टर में वा कर्मों के हिसाब के किताब में दाग नहीं, लेकिन बिन्दी तो पड़ गई, बिल्कुल साफ तो नहीं रहा ना इसलिए कहा जाता है, कर्मों की लीला अति गुह्य है।

टीचर्स तो कर्मों की लीला को अच्छी रीति जान गई हैं ना। टीचर्स सारा दिन क्या गीत गाती है कि ''वाह मेरे श्रेष्ठ कर्मों की लीला'' कर्मों के गहन गति की लीला नहीं, श्रेष्ठ कर्मों की लीला। दुनिया वाले तो हर कर्म में, हर कदम में कर्मों को ही कूटते रहते हैं कि हाय मेरे कर्म! आप कहेंगे – ''वाह श्रेष्ठ कर्म''! अब इसमें और आगे बढ़ो कि सदा वाह श्रेष्ठ कर्म हो, साधारण कर्म नहीं। कर्मों को कूटना तो खत्म हो गया लेकिन श्रेष्ठ कर्म हों इसमें अण्डरलाइन करना। अगर मिक्स कर्म है – साधारण भी हैं, श्रेष्ठ भी हैं तो सफलता भी मिक्स हो जाती है। अभी विशेष अटेन्शन यह देना है कि साधारणता को विशेषता में परिवर्तन करो। इस पर भी कभी सुनायेंगे कि बापदादा हर एक की रोज़ की दिनचर्या में क्या-क्या देखते हैं? साधारणता कितनी है और विशेषता कितनी है – यह रिजल्ट देखते रहते हैं।

बापदादा के पास देखने के साधन इतने हैं जो एक ही समय देश-विदेश के सभी बच्चों को देख सकते हैं। अलग-अलग देखने की आवश्यकता नहीं, 5 मिनट में सबका पता लग जाता। बच्चों के ''वाह-वाह'' के गीत भी गाते हैं, साथ-साथ समान बनाने की एम से चेक भी करते हैं। सुनाया था ना कि बाप के स्नेह वा बाप की पहचान – इसमें तो सब पास हो और कभी-कभी तो कमाल के काम भी करते हो। अच्छी कमाल है, न कि धमाल वाली कमाल। कोई-कोई बच्चे धमाल की भी कमाल करते हैं ना! होती धमाल है लेकिन कहते हैं – यह तो हमारी कमाल है इसलिए बापदादा कहते– परखने की शक्ति को बढ़ाओ। अपने कर्मों को भी परख सकेंगे और दूसरों के कर्मों को भी यथार्थ परख सकेंगे। उल्टे को सुल्टा नहीं कहेंगे। यह परखने की शक्ति की कमी है। और सदा एक बात याद रखो सबके लिए कह रहे हैं – कभी भी कोई ऐसा व्यर्थ वा साधारण कर्म करते हो और अपने-आपको पहचान नहीं सकते हो कि यह राइट है वा रांग है, तो जब ऐसी परिस्थिति आती है, वशीभूत हो जाते हैं, उस समय ऐसी परिस्थिति में सिद्धि को प्राप्त करने की श्रेष्ठ विधि क्या है?

क्योंकि उस समय अपनी बुद्धि तो वशीभूत है। राइट को भी रांग समझते हो, रांग को रांग नहीं समझते हो, राइट समझते हो। फिर जिद्द करेंगे या सिद्ध करेंगे। यह निशानी है वशीभूत बुद्धि की। ऐसे समय पर सदैव एक बापदादा की श्रेष्ठ मत याद रखो कि जिन्हों को बाप ने निमित्त बनाया है, वह निमित्त आत्मायें जो डायरेक्शन देती हैं, उसको महत्व देना चाहिए। उस समय यह नहीं सोचो कि निमित्त बने हुए शायद कोई के कहने से कह रही हैं, इसमें धोखा खा लेते हो। निमित्त बनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा जो शिक्षा वा डॉयरेक्शन मिलते हैं, उसको उस समय महत्व देने से अगर कोई बुरी बात भी होगी तो आप जिम्मेवार नहीं। जैसे ब्रह्मा बाप के लिए सदा कहते हैं कि अगर ब्रह्मा द्वारा कोई गलती भी होगी तो वह गलती भी बदल के आपके प्रति सही हो जायेगी। तो ऐसे निमित्त बनी हुई आत्माओं प्रति कभी भी यह व्यर्थ संकल्प नहीं उठना चाहिए। मानो कोई ऐसा फैंसला भी दे देते हैं जो आपको ठीक नहीं लगता है। लेकिन आप उसमें जिम्मेवार नहीं हैं। आपका पाप नहीं बनेगा। आपका काम ठीक हो जायेगा क्योंकि बाप बैठा है। बाप, पाप को बदल लेगा। यह गुह्य रहस्य है। गुप्त मशीनरी है। इसलिए निमित्त बनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं के श्रेष्ठ डॉयरेक्शन को महत्व से कार्य में लगाओ। इसमें आपका फायदा है, नुकसान भी बदलकर फायदे में हो जायेगा। यह बाप की गारंटी है। समझा? इसलिए सुनाया कि कर्मों की लीला बड़ी विचित्र है। बाप जिम्मेवार है। जिनको निमित्त बनाया है उसका भी जिम्मेवार बाप है। आपके पाप को बदलने का भी जिम्मेवार है। ऐसे ही निमित्त नहीं बनाया है, सोच-समझ के ड्रामा के ला-मुजीब निमित्त बनाया गया है। समझा!

टीचर्स को अच्छा लगता है ना। इसमें फायदा है, बोझ हल्का हो गया। कोई भी बात आयेगी तो कहेंगे– निमित्त बने हुए बड़े जाने। हल्के हो गये ना। लेकिन सिर्फ कहने मात्र नहीं, समझने-मात्र, स्नेह-मात्र, स्वमान-मात्र हो। इन गुह्य बातों को बाप जाने और जो समझदार बच्चे हैं वह जानें। निमित्त बनी हुई आत्माओं के लिए कुछ भी कहना अर्थात् बाप के लिए कहना। निमित्त बाप ने बनाया है ना। बाप से ज्यादा आपको परखने की शक्ति है?

बापदादा का अति स्नेह सभी बच्चों से है। ऐसे नहीं कि निमित्त बने हुए से ही प्यार है। दूसरों से नहीं है। यह भी प्यार के कारण ही डॉयरेक्शन देते हैं। प्यार नहीं होता तो कहते – जैसे चल रहे हैं, चलते रहें। जब इतनी हिम्मत रखी है और ब्राह्मण-जीवन में चल रहे हो, उड़ रहे हो तो छोटी-सी कमजोरी भी क्यों रह जाए। यह है प्यार। प्यार वाले की कमी कभी नहीं देखी जाती है। यह है प्यार की निशानी। जिससे दिल का सच्चा प्यार होता है उसकी कमी को हमेशा अपनी कमी समझते हैं। अच्छा।

कोई भी कार्य करो तो कभी भी कोई हलचल के वातावरण के प्रभाव में नहीं आओ। अपना प्रभाव डालो तो वह आपके प्रभाव में आ जायेंगे और दिल से यही निकलेगा कि सफलता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। हिम्मत का बहुत महत्व है। कभी किसी बात में घबराओं नहीं। हजार भुजाओं वाले आप भी हो। बाप की हजार भुजायें आपकी भी तो हुई ना। अच्छा–

चारों ओर के सदा परखने की शक्ति की विशेष आत्माओं को, सदा हर कर्म और सम्बन्ध में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त करने वाली सफलतामूर्त आत्माओं को, सदा हिम्मत और शुभभावना और शुभकामना द्वारा परिवर्तन करने वाली शक्तिशाली आत्माओं को, सदा ''वाह मेरे श्रेष्ठ कर्म'' के खुशी के गीत गाने वाले बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

वरदान:- **शान्ति की शक्ति से, संस्कार मिलन द्वारा सर्व कार्य सफल करने वाले सदा निर्विघ्न भव**

सदा निर्विघ्न वही रह सकता है जो सी फादर, फालो फादर करता है। सी सिस्टर, सी ब्रदर करने से ही हलचल होती है इसलिए अब बाप को फालो करते हुए बाप समान संस्कार बनाओ तो संस्कार मिलन की रास करते हुए सदा निर्विघ्न रहेंगे। शान्ति की शक्ति से अथवा शान्त रहने से कितना भी बड़ा विघ्न सहज समाप्त हो जाता है और सर्व कार्य स्वत: सम्पन्न हो जाते हैं।

स्लोगन:- त्रिकालदर्शी वह है जो किसी भी बात को एक काल की दृष्टि से नहीं देखते, हर बात में कल्याण समझते हैं।